पंच परमेश्वर

प्रेमचन्द

चित्रांकन
अतनु रॉय

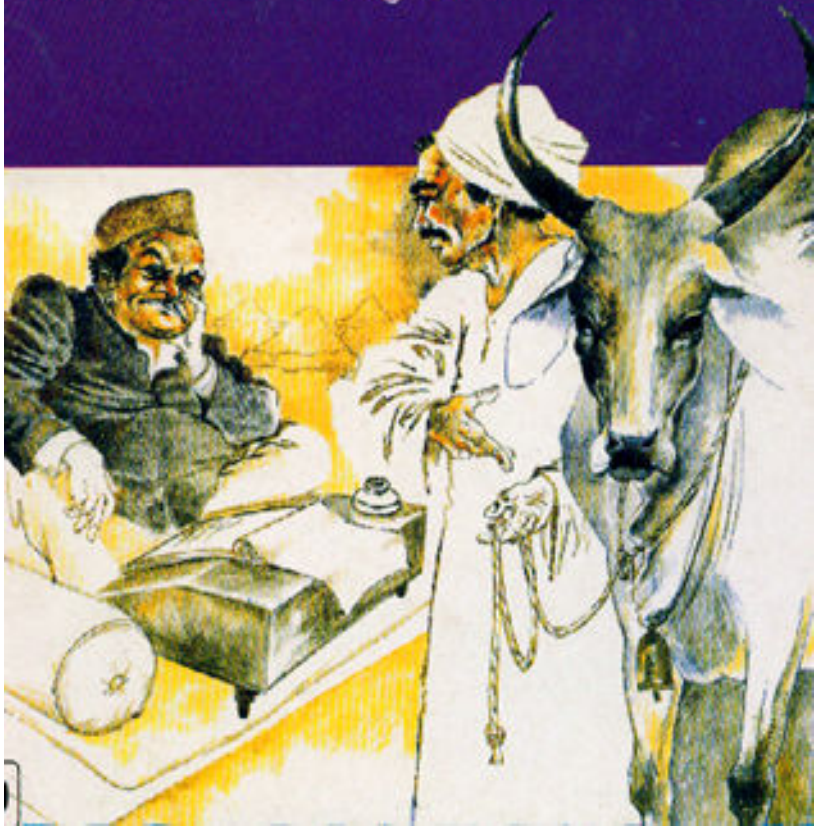

प्रेमचंद

हिन्दी के प्रसिद्ध कहानीकार प्रेमचंद का असली नाम धनपत राय था। इनका जन्म वाराणसी के निकट लम्ही में हुआ था। प्रेमचंद ने कुछ दिनों तक शिक्षा-विभाग में पहले अध्यापक, और फिर सब-डिप्टी इन्सपेक्टर की नौकरी की। परंतु 1920 के बाद उन्होंने अपना पूरा समय हिन्दी पत्रिकाओं के सम्पादन और कहानी/लेख लिखने में बिताया।

अपने काल में हो रहे सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन ही उनकी कहानियों का आधार बने। जहाँ एक तरफ़ उनकी कहानियों में गाँव के लोगों का रहन-सहन, उनकी परेशानियाँ और उनके छोटे बड़े सुख और दुख की झलक मिलती है वहीं दूसरी तरफ़ ज़िंदगी की जटिलता से जूझते हुए नगर-वासियों का सही चित्रांकन मिलता है।

मानव-सम्बन्धों पर आधारित यह कहानी, पंच-परमेश्वर, प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानियों में से एक है।

जुम्मन शेख और अलगू चौधरी बचपन से दोस्त थे। दोनों को एक-दूसरे पर पूरा भरोसा था।

वे साथ खाते-पीते नहीं थे। धर्म भी अलग थे। केवल विचार मिलते थे। यही उनकी मित्रता का आधार था।

जुम्मन की एक बूढ़ी खाला (मौसी) थी। उनके पास थोड़ी-सी ज़मीन-जायदाद थी। जुम्मन ने उन्हें फुसलाकर जायदाद अपने नाम लिखवा ली।

जब तक दान-पत्र की रजिस्ट्री नहीं हुई थी, खाला का खूब आदर होता था। रजिस्ट्री होते ही सब कुछ बदल गया। अब खाला को सूखी रोटी और कड़वे बोल ही सुनने को मिलते थे।

कुछ दिन तक खालाजान ने सुना और सहा। जब और न सह सकीं तो जुम्मन से बोलीं, 'बेटा! मुझे हर महीने कुछ रुपये दे दिया कर। मैं अलग खा-पका लूँगी।'

जुम्मन ने रुपये देने से मना कर दिया। इस पर खाला बिगड़ गईं। उन्होंने पंचायत करने की धमकी दी। पढ़ा-लिखा होने के कारण जुम्मन का बहुत मान था। वह जानते थे कि जीत उन्हीं की होगी। हंस कर बोले, 'ज़रूर करो।'

कई दिनों तक बूढ़ी खाला, हाथ में लकड़ी लिए घर-घर घूमीं। सब लोगों से पंचायत में आने के लिए कहा। किसी ने हाँ-हूँ करके टाल दिया तो किसी ने उल्टे उन्हें ही गालियाँ दीं।

चारों ओर से घूमघाम कर बेचारी अलगू चौधरी के पास आईं। अलगू से भी पंचायत में आने के लिए कहा।

अलगू बोला, 'आ तो जाऊँगा पर मुँह न खोलूँगा। जुम्मन से मेरी पुरानी दोस्ती है। उससे बिगाड़ नहीं कर सकता।' इस पर खाला बोलीं, 'बेटा ! क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे।' खाला चली गईं पर अलगू बहुत देर तक यही बात सोचता रहा।

शाम के समय पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। खाला ने पंचों को अपना दुख सुनाया और न्याय माँगा। वे पंच का फैसला मानने को तैयार थीं।

फिर सरपंच बनाने की बारी आई। पूछने पर जुम्मन बोले, 'खाला जिसे चाहें उसे बनायें। मैं भी पंच का फैसला मानने को तैयार हूँ।' तब खाला ने अलगू को सरपंच बनाया।

जुम्मन खुश हो गए। अब तो जीत उनकी ही होनी थी। पर अलगू कतराने लगे। तब खाला बोलीं, 'बेटा! दोस्ती के लिए कोई अपना ईमान नहीं बेचता। पंच न किसी के दोस्त होते हैं, न दुश्मन। पंच के दिल में खुदा बसता है। उनके मुहँ से जो बात निकलती है, वह खुदा की तरफ़ से निकलती है।'

अलगू चौधरी सरपंच हुए। खाला और जुम्मन, अब उनके लिए, एक समान थे।

अब जुम्मन ने अपनी बात पंचों से कही, 'खाला की जायदाद से मुझे ज्यादा फ़ायदा नहीं होता। इसलिए मैं उन्हें हर महीने खर्च नहीं दे सकता। फिर इस तरह की कोई लिखा-पढ़ी भी तो नहीं हुई थी।'

इस बात पर अलगू, जुम्मन से सवाल-जवाब करने लगे। जुम्मन हैरान थे।

फिर अलगू ने फ़ैसला सुनाया, 'खाला को खर्च देने लायक लाभ तो जायदाद से हो ही जाता है। अगर जुम्मन खर्च नहीं देंगे तो दान-पत्र की रजिस्ट्री, रद्द कर दी जायेगी।'

फ़ैसला सुनकर जुम्मन दंग रह गए। 'क्या यही कलियुग की दोस्ती है। जिस पर भरोसा था उसी ने समय पड़ने पर धोखा दिया !'

सब लोग अलगू की सच्चाई की तारीफ़ करने लगे। 'इसी का नाम पंचायत है। दूध का दूध, पानी का पानी कर दिया।'

इस फ़ैसले ने अलगू और जुम्मन को दुश्मन बना दिया। सच के एक झोंके ने दोस्ती की जड़ हिला दी।

जुम्मन हर समय बदला लेने की सोचने लगे। शीघ्र ही उन्हें, यह अवसर मिला।

पिछले साल अलगू मेले से बड़े-बड़े सींगोंवाले एक जोड़ी बैल खरीद लाया था। पंचायत के एक महीने बाद ही एक बैल मर गया। अब एक बैल से क्या होता ? सो अलगू ने उसे गाँव के बनिए समझू साहू को बेच दिया। साहू ने डेढ़ सौ रुपये में बैल खरीद लिया। एक महीने बाद दाम चुकाने की बात हुई।

समझू साहू गावँ से गुड़-घी लादकर मंडी ले जाते थे। फिर मंडी से तेल नमक लाकर गाँव में बेचते थे। नया बैल पाया तो दिन में तीन-चार चक्कर लगाने लगे। पशु के साथ पशु का सा बर्ताव किया। न ठीक से चारा दिया, न पानी ही। आखिर एक दिन, कोड़े की मार खाते-खाते बैल जो गिरा, फिर कभी न उठा।

कई महीने बाद अलगू बैल के दाम माँगने गये। समझू साहू और उनकी पत्नी ने उन्हें बहुत डाँटा। 'मरा-सा बैल दिया था, उस पर दाम माँगने चले हैं। यहाँ तो जन्म-भर की कमाई लुट गई।'

अलगू डेढ़-सौ रुपये गँवाना न चहाते थे। लोगों ने उन्हें पंचायत करने को कहा। वे मान गए।

पंचायत की तैयारियाँ हुईं। तीसरे दिन शाम को उसी पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। समझू साहू ने जुम्मन शेख को सरपंच बनाया। अलगू निराश हो गए। पर कुछ बोले नहीं।

सरपंच बनते ही जुम्मन में ज़िम्मेदारी आ गई। वे न्याय और धर्म के आसन पर बैठे थे। यह समय निजी बदला लेने का नहीं था। उन्हें केवल सच ही बोलना चाहिए।

पंचों ने समझू साहू और अलगू चौधरी से सवाल-जवाब किया। अंत में जुम्मन ने फ़ैसला सुनाया, 'जब बैल खरीदा गया था तब वह बीमार नहीं था। समझू साहू की लापरवाही और अत्याचार के कारण की वह मारा गया। समझू साहू अलगू चौधरी को बैल के पूरे दाम दें। अलगू चाहें तो दाम कुछ कम कर सकते हैं।'

अलगू खुशी से झूम गये। उठ खड़े हुए और ज़ोर से बोले, 'पंच-परमेश्वर की जय।'

थोड़ी देर बाद जुम्मन अलगू के पास आए। गले लिपटकर बोले, 'आज पता चला है कि पंच न किसी का दोस्त होता है, न दुश्मन। पंच में तो परमेश्वर वास करते हैं।'

अलगू रोने लगे। दिल का मैल धुल चला था। मित्रता की मुरझाई हुई लता फिर हरी हो गई।